ICAR-National Research Institute for Integrated Pest Management

New Delhi – 110 068

तूरगढ़, उदयपुर, राजस्थान को आईपीएम मॉडल गांव बनाने की पहल

उदयपुर, 18 अक्टूबर 2026। राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसंधान संस्थान (ICAR-NCIPM), नई दिल्ली के तत्वावधान में विद्यमान कृषि विज्ञान केंद्र, बड़गांव, उदयपुर तथा भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जोन-II, जोधपुर के संयुक्त सहयोग से तूरगढ़ गांव में मक्का प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लगभग 118 किसानों ने भाग लिया। इस दौरान किसानों को एकीकृत कीट प्रबंधन (IPM) तकनीकों की जानकारी दी गई तथा कीटनाशक किट वितरित की गईं।

परियोजना के अंतर्गत तूरगढ़ गांव को आईपीएम मॉडल गांव के रूप में विकसित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य रासायनिक कीटनाशकों के अंधाधुंध उपयोग को कम करना, मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण की सुरक्षा करना तथा खेती की लागत घटाकर उत्पादन और किसानों की आय में वृद्धि करना है। कार्यक्रम के दौरान किसानों को मक्का की उन्नत किस्मों के बीज उपलब्ध कराने के साथ-साथ अंतरफसली खेती और जैविक कीट नियंत्रण तकनीकों के बारे में जागरूक किया गया।

कार्यक्रम के दौरान संस्थान के निदेशक डॉ. रमन थन्गावेलु, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. श्रवण हलधर, परियोजना से जुड़े वैज्ञानिक एवं अधिकारी डॉ. मुकेश खोखर, डॉ. अनुप कुमार और डॉ. पी.एन. मीणा ने किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया। कृषि विज्ञान केंद्र, बड़गांव के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. प्रफुल्ल चंद्र भटनागर ने परियोजना के प्रभावी क्रियान्वयन में सहयोग दिया। प्रसार वैज्ञानिक डॉ. जीवन राम जाट ने किसानों को आईपीएम मॉडल गांव की तकनीकों को अपने खेतों तथा आसपास के गांवों में अपनाने के लिए प्रेरित किया।

कृषि विज्ञान केंद्र के नोडल अधिकारी डॉ. दीपक जैन ने बताया कि रासायनिक कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से कीटों में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, जिससे खेती की लागत में वृद्धि होती है। इसके समाधान के लिए परियोजना के अंतर्गत किसानों को ट्राइकोडर्मा, ट्राइकोग्रामा, बेसिलस थुरिंजिएन्सिस, ब्यूवेरिया बेसियाना, मेटाराइजियम, बर्ड-पर्च, फेरोमोन ट्रैप तथा नीम तेल जैसे जैविक एवं पर्यावरण-अनुकूल कीट नियंत्रण साधनों के उपयोग की जानकारी दी गई।

उन्होंने बताया कि कीटनाशकों का प्रयोग तभी किया जाना चाहिए, जब कीटों का प्रकोप आर्थिक क्षति स्तर तक पहुंच जाए। इससे अनावश्यक छिड़काव में कमी आएगी, उत्पादन लागत घटेगी, पर्यावरण सुरक्षित रहेगा और किसानों को बेहतर लाभ प्राप्त होगा।

कार्यक्रम से किसानों में एकीकृत कीट प्रबंधन के प्रति जागरूकता बढ़ी। तूरगढ़ को आईपीएम मॉडल गांव के रूप में विकसित करने की यह पहल टिकाऊ खेती, सुरक्षित फसल उत्पादन और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

NRIIPM
मक्का में समेकित कीट प्रबंधन पर
प्रक्षेत्र दिवस
दि. 11 अक्टूबर 2025
जिला - पी. 3502

NRIIPM
(जनजाति परियोजना)
मक्का आधारित आई.पी.एम. मॉडल
मक्का में समेकित नाशीजीव प्रबंधन पर
प्रक्षेत्र दिवस
किसान - पी. 3502

मक्का प्रक्षेत्र दिवस मनाया, 118 किसानों को आईपीएम किट दीं

भास्कर न्यूज | फलासिया

फलासिया तहसील के तूरगढ़ गांव में मक्का पर प्रक्षेत्र दिवस मनाया गया। आयोजन राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, विद्याभवन कृषि विज्ञान केंद्र बड़गांव उदयपुर, भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन-II, जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। कार्यक्रम में करीब 118 किसान शामिल हुए। किसानों को एकीकृत कीट प्रबंधन के किट बांटे गए।

रासायनिक कीटनाशकों के अंधाधुंध उपयोग से मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण पर असर को देखते हुए तूरगढ़ को आईपीएम मॉडल गांव के रूप में विकसित किया जा रहा है। कृषि विज्ञान केंद्र के नोडल अधिकारी डॉ. दीपक जैन ने बताया कि ज्यादा कीटनाशक डालने से कीटों में प्रतिरोधकता बढ़ती है। खेती की लागत बढ़ती है। इसी से निपटने के लिए राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसंधान संस्थान की उप-जनजाति परियोजना के तहत किसानों को मक्का की उन्नत किस्में, अंतरशस्य के लिए मूंग के बीज, जैविक कीट नियंत्रण की तकनीकें भी दी जा रही हैं।

परियोजना में मक्का को कीटों से बचाने के लिए ट्राइकोडर्मा, ट्राइकोग्रामा, बैसिलस थुरिंजिएन्सिस, मेटाराइजियम, वर्टिसिलियम, फेरोमोन ट्रैप, नीम तेल जैसे साधन अपनाए गए। रासायनिक कीटनाशक का छिड़काव तभी किया गया, जब कीट प्रकोप 'आर्थिक क्षति स्तर' से ऊपर मिला। इससे बेवजह खर्च रुका। पर्यावरण नुकसान भी कम हुआ। उपयोग में लिए गए प्रमुख जैविक उत्पाद संस्थान की नई दिल्ली प्रयोगशाला में तैयार किए गए। किसानों को दिए गए। कार्यक्रम तूरगढ़ के लाभान्वित किसान वजा राम खराड़ी के खेत पर हुआ।

पहल में संस्थान के निदेशक डॉ. रमन थंगावेलु, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. श्रवण हलधर, नोडल अधिकारी डॉ. मुकेश खोखर, डॉ. अनूप कुमार, डॉ. पीएन मीणा का तकनीकी मार्गदर्शन मिला। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख डॉ. प्रफुल्ल चंद्र भटनागर ने परियोजना का क्रियान्वयन सुनिश्चित किया। प्रसार वैज्ञानिक डॉ. जीवन राम जाट ने किसानों को यह आईपीएम मॉडल पूरे गांव, आसपास के क्षेत्रों में अपनाने के लिए प्रेरित किया।

दैनिक नवज्योति AasPaas - 18 Oct 2026 - Page 5

तूरगढ़ को आईपीएम मॉडल गांव बनाने की पहल, 118 किसानों ने देखी मक्का की फसल

नवज्योति, फलासिया। राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, विद्याभवन कृषि विज्ञान केंद्र, बड़गांव, उदयपुर एवं भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जोन-II, जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में तूरगढ़ गांव में मक्का पर प्रक्षेत्र दिवस आयोजित किया गया। इसमें करीब 118 किसानों ने भाग लिया। परियोजना की शुरुआत में किसानों को आईपीएम किट भी वितरित की गईं।

कृषि विज्ञान केंद्र के परियोजना नोडल अधिकारी डॉ. दीपक जैन ने बताया कि कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग से मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण, खेती की लागत और उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसके समाधान के लिए उप-जनजाति परियोजना के तहत तूरगढ़ को आईपीएम मॉडल गांव के रूप में विकसित किया जा रहा है। इसके अंतर्गत मक्का की उन्नत किस्मों के बीज के साथ अंतरशस्य के रूप में

मक्का पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन,तूरगढ़ गाँव को आईपीएम मॉडल गाँव के रूप में विकसित करने की पहल । फोटो पवन लोहार

मूंग के बीज उपलब्ध कराए गए तथा एकीकृत कीट प्रबंधन तकनीकों को बढ़ावा दिया गया।

मक्का में ट्राइकोडर्मा, ट्राइकोग्रामा, बैसिलस थुरिंजिएन्सिस, मेटाराइजियम, वर्टिसिलियम, फेरोमोन ट्रैप और नीम तेल जैसे जैविक नियंत्रण साधनों का उपयोग किया गया। आर्थिक क्षति स्तर के आधार पर ही रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग किया गया, ताकि अनावश्यक छिड़काव कम हो, लागत घटे, पर्यावरण सुरक्षित रहे और उत्पादन बढ़े। प्रमुख जैविक उत्पाद संस्थान की नई दिल्ली स्थित प्रयोगशाला में तैयार कर किसानों को उपलब्ध कराए गए। संस्थान के निदेशक डॉ. रमन थंगावेलु, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. श्रवण हलधर और परियोजना नोडल अधिकारी डॉ. मुकेश खोखर ने समय-समय पर खेतों का भ्रमण कर तकनीकी मार्गदर्शन दिया। डॉ. अनूप कुमार एवं डॉ. पी. एन. मीणा ने भी मार्गदर्शन किया। कृषि विज्ञान केंद्र, बड़गांव के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं संस्थान प्रमुख डॉ. प्रफुल्ल चंद्र भटनागर परियोजना के मुख्य मार्गदर्शक रहे। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रसारवैज्ञानिक डॉ. जीवन राम जाट ने आईपीएम मॉडल को आसपास के गांवों और जिले में भी अपनाने की सलाह दी तथा केंद्र की प्रमुख गतिविधियों की जानकारी दी।

ICAR-National Research Institute for Integrated Pest Management

New Delhi – 110 068

Initiative to develop Toorgarh, Udaipur, Rajasthan as an IPM Model Village

Udaipur, October 18, 2026 – Under the aegis of the National Research Institute for Integrated Pest Management (ICAR–NRIIPM), New Delhi, and with joint collaboration of Krishi Vigyan Kendra (KVK), Badgaon, Udaipur and ICAR–Agricultural Technology Application Research Institute, Zone-II, Jodhpur, a Maize Field Day was organized in Toorgarh village. Around 118 farmers participated in the program. Farmers were informed about Integrated Pest Management (IPM) techniques, and pest management kits were distributed.

As part of the project, Toorgarh village is being developed as an IPM Model Village. The objective is to reduce indiscriminate use of chemical pesticides, safeguard human health and the environment, lower farming costs, and increase crop production and farmers' income. Farmers were also made aware of improved maize varieties, intercropping practices, and biological pest control techniques.

During the program, Dr. Raman Thangavelu (Director, NCIPM), Dr. Shravan Haldhar (Principal Scientist), and project scientists/officers Dr. Mukesh Khokhar, Dr. Anup Kumar, and Dr. P. N. Meena provided technical guidance. Dr. Prafull Chandra Bhatnagar (Senior Scientist & Head, KVK Badgaon) contributed to effective implementation of the project. Dr. Jeevan Ram Jat (Extension Scientist) motivated farmers to adopt IPM model village techniques in their own fields and neighboring villages.

Dr. Deepak Jain (Nodal Officer, KVK Badgaon) explained that excessive use of chemical pesticides increases pest resistance, thereby raising farming costs. To address this, farmers were trained to use biological and eco-friendly pest control methods such as Trichoderma, Trichogramma, Bacillus thuringiensis, Beauveria bassiana, Metarhizium, bird perches, pheromone traps, and neem oil.

He emphasized that pesticides should only be used when pest infestation reaches the economic threshold level. This reduces unnecessary spraying, lowers production costs, protects the environment, and ensures better profits for farmers.

The program enhanced farmers' awareness of IPM practices. The initiative to develop Toorgarh as an IPM Model Village marks an important step toward sustainable farming, safe crop production, and environmental protection.

NRIIPM
मक्का में समेकित कीट प्रबंधन पर
प्रक्षेत्र दिवस
दि. 11 अक्टूबर 2025
जिला - पी. 3502

NRIIPM
(जन जनजाति परियोजना)
मक्का आधारित आई.पी.एम. मॉडल
गाँव तुरगढ़, तह. - फलासिया, जिला - उद
मक्का में समेकित नाशीजीव प्रबंधन पर
प्रक्षेत्र दिवस
किसान - पी. 3502

मक्का प्रक्षेत्र दिवस मनाया, 118 किसानों को आईपीएम किट दीं

भास्कर न्यूज | फलासिया

फलासिया तहसील के तूरगढ़ गांव में मक्का पर प्रक्षेत्र दिवस मनाया गया। आयोजन राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, विद्याभवन कृषि विज्ञान केंद्र बड़गांव उदयपुर, भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन-II, जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। कार्यक्रम में करीब 118 किसान शामिल हुए। किसानों को एकीकृत कीट प्रबंधन के किट बांटे गए।

रासायनिक कीटनाशकों के अंधाधुंध उपयोग से मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण पर असर को देखते हुए तूरगढ़ को आईपीएम मॉडल गांव के रूप में विकसित किया जा रहा है। कृषि विज्ञान केंद्र के नोडल अधिकारी डॉ. दीपक जैन ने बताया कि ज्यादा कीटनाशक डालने से कीटों में प्रतिरोधकता बढ़ती है। खेती की लागत बढ़ती है। इसी से निपटने के लिए राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसंधान संस्थान की उप-जनजाति परियोजना के तहत किसानों को मक्का की उन्नत किस्में, अंतरशस्य के लिए मूंग के बीज, जैविक कीट नियंत्रण की तकनीकें भी दी जा रही हैं।

परियोजना में मक्का को कीटों से बचाने के लिए ट्राइकोडर्मा, ट्राइकोग्रामा, बैसिलस थुरिंजिएन्सिस, मेटाराइजियम, वर्टिसिलियम, फेरोमोन ट्रैप, नीम तेल जैसे साधन अपनाए गए। रासायनिक कीटनाशक का छिड़काव तभी किया गया, जब कीट प्रकोप 'आर्थिक क्षति स्तर' से ऊपर मिला। इससे बेवजह खर्च रुका। पर्यावरण नुकसान भी कम हुआ। उपयोग में लिए गए प्रमुख जैविक उत्पाद संस्थान की नई दिल्ली प्रयोगशाला में तैयार किए गए। किसानों को दिए गए। कार्यक्रम तूरगढ़ के लाभान्वित किसान वजा राम खराड़ी के खेत पर हुआ।

पहल में संस्थान के निदेशक डॉ. रमन थंगावेलु, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. श्रवण हलधर, नोडल अधिकारी डॉ. मुकेश खोखर, डॉ. अनूप कुमार, डॉ. पीएन मीणा का तकनीकी मार्गदर्शन मिला। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख डॉ. प्रफुल्ल चंद्र भटनागर ने परियोजना का क्रियान्वयन सुनिश्चित किया। प्रसार वैज्ञानिक डॉ. जीवन राम जाट ने किसानों को यह आईपीएम मॉडल पूरे गांव, आसपास के क्षेत्रों में अपनाने के लिए प्रेरित किया।

दैनिक नवज्योति AasPaas - 18 Oct 2026 - Page 5

तूरगढ़ को आईपीएम मॉडल गांव बनाने की पहल, 118 किसानों ने देखी मक्का की फसल

नवज्योति, फलासिया। राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, विद्याभवन कृषि विज्ञान केंद्र, बड़गांव, उदयपुर एवं भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जोन-II, जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में तूरगढ़ गांव में मक्का पर प्रक्षेत्र दिवस आयोजित किया गया। इसमें करीब 118 किसानों ने भाग लिया। परियोजना की शुरुआत में किसानों को आईपीएम किट भी वितरित की गईं।

कृषि विज्ञान केंद्र के परियोजना नोडल अधिकारी डॉ. दीपक जैन ने बताया कि कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग से मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण, खेती की लागत और उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसके समाधान के लिए उप-जनजाति परियोजना के तहत तूरगढ़ को आईपीएम मॉडल गांव के रूप में विकसित किया जा रहा है। इसके अंतर्गत मक्का की उन्नत किस्मों के बीज के साथ अंतरशस्य के रूप में

मक्का पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन,तूरगढ़ गाँव को आईपीएम मॉडल गाँव के रूप में विकसित करने की पहल । फोटो पवन लोहार

मूंग के बीज उपलब्ध कराए गए तथा एकीकृत कीट प्रबंधन तकनीकों को बढ़ावा दिया गया।

मक्का में ट्राइकोडर्मा, ट्राइकोग्रामा, बैसिलस थुरिंजिएन्सिस, मेटाराइजियम, वर्टिसिलियम, फेरोमोन ट्रैप और नीम तेल जैसे जैविक नियंत्रण साधनों का उपयोग किया गया। आर्थिक क्षति स्तर के आधार पर ही रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग किया गया, ताकि अनावश्यक छिड़काव कम हो, लागत घटे, पर्यावरण सुरक्षित रहे और उत्पादन बढ़े। प्रमुख जैविक उत्पाद संस्थान की नई दिल्ली स्थित प्रयोगशाला में तैयार कर किसानों को उपलब्ध कराए गए। संस्थान के निदेशक डॉ. रमन थंगावेलु, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. श्रवण हलधर और परियोजना नोडल अधिकारी डॉ. मुकेश खोखर ने समय-समय पर खेतों का भ्रमण कर तकनीकी मार्गदर्शन दिया। डॉ. अनूप कुमार एवं डॉ. पी. एन. मीणा ने भी मार्गदर्शन किया। कृषि विज्ञान केंद्र, बड़गांव के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं संस्थान प्रमुख डॉ. प्रफुल्ल चंद्र भटनागर परियोजना के मुख्य मार्गदर्शक रहे। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रसारवैज्ञानिक डॉ. जीवन राम जाट ने आईपीएम मॉडल को आसपास के गांवों और जिले में भी अपनाने की सलाह दी तथा केंद्र की प्रमुख गतिविधियों की जानकारी दी।